लालटेन

मैं जब भी किसी रूमानी चीज़ का तसव्वुर करता हूँ। तो लालटेन की शबीह मेरे ज़ेहन में उभरने लगती है। और मेरा दिमाग मुझे मेरे इस गैर शायराना तसव्वुर पर लानत मलामत करने लगता है। यकीन ज़ानिये बेला चमेली के फूल, चाँदनी रात, गुलमेहर की डालें, काली घटाएँ यह सब मेरे ऊपर इतना खुश गवार रूमानी असर नहीं छोड़ती जितना कि यह मिट्टी के तेल में बसे हुये धुएं से काली लालटेन।

मैं आज भी उस लड़की को नहीं भूल पाया हूँ। जिसको मैं अपनी पहली मोहब्बत कह सकता हूँ जो कि सिर्फ़ पचास फीसद कामयाब थी यानी कि बिल्कुल यकतरफ़ा, सिर्फ मेरी तरफ से। मैं नवें दर्जे में था। तेरह, चौदह साल की उम्र होगी गर्मियों की छुट्टियाँ गुज़ारने मैं अपने मामूँ, मुमानी की मोहब्बत में और कुछ उनके आम और जामुन के बाग़ात से, मैं तक़रीबन चार पाँच साल बाद मामूँ के गाँव गया था। मामूँ के यहाँ मैं दोपहर को पहुँच गया था। और फिर मामूँ-मुमानी से मिलने के बाद बाहर घूमने निकल पड़ा। छोटे से गाँव में काफ़ी दोस्त बन गये थे। और पूरा गाँव जान गया था कि शहर से तहसीलदार साहब का भांजा आया हुआ है। क्योंकि यह गाँव, शहर क्या बल्कि क़स्बे से बहुत दूर था। बिल्कुल अन्दर की तरफ़ इस लिये उनमें से अक्सर देहात के लोगों ने शहर नहीं देखा था। इन लोगों की पूरी-पूरी ज़िन्दगियाँ उसी गाँव से शुरु होकर वहीं खत्म हो जाती थीं। और वह उस वक़्त का ज़माना था जब गाँव और शहर दो बिल्कुल मुतज़ाद चीज़ें थीं। एक दूसरे से बिल्कुल कटऑफ़, और न ही उस वक़्त गाँव वाले मज़दूरी वगैरह के चक्कर में शहर आया करते थे।

ग़रज़ मैं पहले दिन, दिन भर गाँव में आवारगर्दी करने के बाद जब मैं शाम को घर पहुँचा तो अजीब अन्धेरे-अन्धेरे का एहसास हुआ। मैंने मुमानी से पूछा कि यहाँ लाइट नहीं आ रही है फिर यकायक

ख़्याल आया कि यहाँ गाँव में बिजली कहाँ | मुमानी हँसने लगीं फिर उन्होंने कहा अरे फुल्लो लालटेन जला दे | तब मुझे एहसास हुआ कमरे में कोई और भी बैठा हुआ है | एक लड़की सट से कमरे से निकल गयी थी | थोड़ी देर बाद वह जलती हुई लालटेन लिये कमरे में दाख़िल हो रही थी | लालटेन की रौशनी में उसका चेहरा चमक रहा था | मैं उसे देखता ही रह गया | मैंने सोचा परियाँ ऐसी ही होती होंगी | उसने लालटेन स्टूल पर रख दी थी और फिर जाकर मुमानी के बग़ल में बैठ गयी थी | यह कौन है मुमानी की बड़ी चहीती लगती है मैंने सोचा | तब ही मामूँ मस्जिद से नमाज़ पढ़कर आ गये | और मुमानी ने कहा चलो फुल्लो खाना निकाला जाये | और फुल्लो मुमानी के साथ बावर्चीख़ाने में चली गयी | खाना-खाने के बाद मेरा बिस्तर लगा दिया गया | थोड़ी देर बाद मुमानी ने कहा अब सो जाओ | अभी सो जाऊँ मैंने हैरत से कहा फिर घड़ी की तरफ़ देखा अरे अभी तो सिर्फ़ आठ बजे हैं | मैंने मुमानी से कहा | दस, ग्यारह बजे से पहले तो मैं सोता नहीं | मैं अभी नहीं सोऊँगा अभी मुझे पढ़ना है | अरे अभी तो इम्तिहान देकर आये हो अब क्या पढ़ोगे | मुमानी ने पूछा | और मैंने वज़ाहत की कि कोर्स की किताबें नहीं बल्कि कहानियों की किताबे पढ़नी हैं | अच्छा पढ़ो लेकिन देर तक मत पढ़ना वरना लालटेन की रौशनी में तुम्हारी आँखें दुखने लगेंगी | मुमानी मुझे मशवरह देकर बाहर आँगन में सोने चली गयी | मामूँ बाहर पहले ही मच्छरदानी तान कर लेट चुके थे | यह फुल्लो कहाँ सोई है मैंने सोचा और फिर अपने बैग से कहानियों की किताबों का पुलिन्दा निकाल लिया एक किताब छाँट कर लेट कर उसे पढ़ने लगा | थोड़ी देर में मुझे प्यास का एहसास हुआ | आँगन में पानी के घड़े रखे हुये थे | एक गिलास पानी घड़े से निकाल कर पिया | देखा तो फुल्लो की चारपाई भी मुमानी के बग़ल में बिछी हुई थी | और फुल्लो लेटे हुये आसमान के तारे गिन रही थी | मुझे ऐसा ही महसूस हुआ | घड़े और गिलास की खड़बड़ की आवाज़ से उसने गर्दन घुमाकर मेरी तरफ़ तवज्जो की थी | और अपना रुख़

फिर आसमान की तरफ़ कर लिया। मैं अन्दर आकर दोबारह किताब पढ़नेलगा। पढ़ते-पढ़ते काफ़ी देर हो गयी थी। नींद तो मुझे नहीं आ रही थी लेकिन लालटेन की रौशनी बहुत कम थी। या लालटेन में पढ़ने के आदी न होने की वजह से मेरी आँखें दर्द करने लगीं। लेकिन कहानी बहुत मज़ेदार थी। इसको तो मुझे ख़त्म करके ही सोना था। तब ही एक दम कमरे की रौशनी बहुत बढ़ गयी। मैंने चेहरे के पास से किताब हटाकर देखा तो फुल्लो ने लालटेन की बत्ती ऊँची कर दी थी। लालटेन ख़ूब तेज़ हो गयी थी। और उसकी रौशनी में फुल्लो का चेहरा दमकने लगा था। फुल्लो लालटेन की रौशनी तेज़ करके फ़ौरन ही चली गयी थी। और मैं दोबारह कहानी पढ़ने लगा लेकिन अब कहानी में ज़्यादा मज़ा नहीं आ रहा था। मैं फुल्लो के बारे में सोचने लगा था। कितनी अच्छी है यह लड़की। जानती थी कि कम रौशनी में मुझे तकलीफ़ हो रही होगी मुझे इतना भी नहीं मालूम था कि लालटेन की रौशनी कम ज़्यादा भी की जा सकती है। और वह गाँव की लड़की किसी इन्जीनियर की तरह लालटेन के सब पुर्ज़ों से वाक़िफ़। थोड़ी देर में मुझे नींद आने लगी। मैंने लालटेन का क़रीब से मुआयना किया, उसकी बत्ती इतनी कम कर दी कि वह बुझ गयी। मैं अपने बिस्तर पर जाकर सो गया। सुबह आँख खुली तो एक दम बावर्ची ख़ाने की तरफ़ नज़र चली गयी। देखा तो फुल्लो बहुत ज़ोर शोर से आटा गूँध रही है। और इस सिलसिले में हिल चली जा रही है। बिल्कुल ऐसे ही जैसे अच्छी क़व्वालियों में किसी पर हाल की कैफ़ियत तारी हो जाती है। मैंने चारों तरफ़ का जायज़ा लिया सारी पलंगें आँगन से उठकर बरआमदे और कमरों में बिछ चुकी थीं। लगता था सबको उठे हुये एक ज़माना हो गया। मैंने नाश्ता वग़ैरह किया। और बरआमदे में मुमानी के पास आकर बैठ गया। आमों का ढेर लगा हुआ था। तुख़मी, खट्टे, कच्चे आम। मुमानी और फुल्लो अचार के लिये आम काट रही थीं। कच्चे आम देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया। और मैंने एक आम उठाकर

नौश करना शुरू कर दिया। अरे बहुत खट्टा है। सुमानी ने मुझे समझाया। अरे यही तो मज़ेदार होता है। मैं एक आम खत्म कर चुका था। दूसरा उठाया ही था कि बावर्ची खाने में कोई चीज़ जलने लगी और सुमानी तेज़ी से बावर्ची खाने की तरफ़ लपकी। अब हम और फुल्लो वहाँ अकेले रह गये। और मेरा दिल ख़्वाह-मख़्वाह बिला वजह धड़कने लगा। और इस चक्कर में। मैंने दूसरा आम जल्दी-जल्दी खाकर तीसरा उठा लिया। फुल्लो आम काटने में मशग़ूल थी पता नहीं उसका भी दिल धड़क रहा था कि नहीं मैंने तीसरा आम खाकर चौथा उठा लिया। सुमानी बावर्ची ख़ाने से लौट कर अभी नहीं आयी थी। लगता था वह दूसरे कामों से मसरूफ़ हो गयी। और दिल की धड़कनों के साथ-साथ मेरी घबराहट भी बढ़ती चली जा रही थी। ज़्यादा घबराहट थी तो मुझे वहाँ से उठ जाना चाहिये था। कहीं बाहर निकल जाता घूमता फिरता। सुमानी भी कोई ऐसा हुक्म सादर करके नहीं गयी थीं कि यहीं बैठे रहो। लेकिन मेरा वहाँ से उठने का दिल चाहता तो उठता। और जब मैंने मारे घबराहट के एक आम और उठाया। तो फुल्लो बोल पड़ी अब मत खाइये नुक़सान करेगा। और मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। फुल्लो कुछ बोली तो सही। मैं ने कहा अरे बिल्कुल नुक़सान नहीं करता। मैं तो बीस-बीस कच्चे आम एक वक़्त में खा लेता हूँ। बीस-बीस आम इतने ही खट्टे। फुल्लो ने पूछा हाँ बिल्कुल इससे भी ज़्यादा खट्टे। और कहकर फुल्लो हैरत के समन्दर में ग़ोता खाने लगी थी। मेरी इस गप को इस बेचारी भोली भाली लड़की ने सच समझा था। हम लोगों की गुफ़्तगू और जारी रहती तब ही मेरे कल के बने हुये दोस्त घर में दाख़िल हो गये। चलो जामुन तोड़ने नहीं चलोगे। उन्होंने मुझसे पूछा था। हां हाँ चलो मैंने बेदिली से कहा। और फिर भारी क़दमों के साथ निकल गया। कल के दोस्त आज मुझे दुश्मन नज़र आ रहे थे। बहरहाल दिन भर जामुन तोड़ता रहा। ख़ुद भी खाता रहा और अपनी क़मीस और पैन्ट को भी खिलाता रहा। कपड़ों पर इस क़दर

धब्बे पड़ गये कि मुझे अपनी अम्मी याद आने लगीं। नये कपड़ों का मैंने जो हश्र किया था अगर वह होतीं तो मेरा क्या हश्र करतीं। ग़रज़ इस रोज़ मैं जल्दी घर पहुँच गया। घर में सन्नाटा था। मामूँ कहीं बाहर गये हुये थे। मुमानी मेरी लायी हुई कहानियों की किताबें पढ़ रही थीं। और फुल्लो! फुल्लो कहीं नहीं दिखायी दे रही थी। कहाँ दिन भर डाएँ-डाएँ फिरा करते हो कुछ खाने पीने का होश नहीं। मुमानी मेरे लिये खाना निकालने के लिये उठने लगीं। नहीं मुमानी इस वक़्त बिल्कुल भूक नहीं। बाहर खूब फल वग़ैरह खा लिये अब तो शाम ही को खाना खायेंगे। और मैं फिर शाम का इन्तिज़ार करने लगा। शाम हुई तो फिर फुल्लो लालटेन जलायेगी। और फिर मैं लालटेन की रौशनी में उसका दमकता चेहरा देख सकूँगा जब वह लालटेन जलाकर घर के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में रखना शुरू करेगी।

फुल्लो घर में नहीं थी। बहुत बुरा लग रहा था। शायद कहीं पड़ोस में गयी हो। मैंने सोचा। गाँव की वही शाम जिसके अन्धेरे से कल रात मुझे अजीब घबराहट और बोरियत होने लगी थी। आज उसी शाम का मैं इन्तिज़ार करने लगा। शाम होने लगी तो वाक़ई फुल्लो ने लालटेन की चिमनियाँ साफ़ करके उनमें तेल भरना शुरू कर दिया। लगता है इस घर की लालटेन इन्चार्ज यही है। मैंने सोचा। अन्धेरा हो चुका था। और फुल्लो का चेहरा लालटेन की रौशनी में दमकना शुरू हो गया था। आज कल से ज़्यादा चमक रहा था। फुल्लो ने चिमनियाँ जो साफ़ कर दी थीं। मैं वहाँ एक हफ़्ता रहा। इस एक हफ़्ते में फुल्लो से मुश्किल से चार पाँच मरतबा बात हुई होगी।

चलते-चलते मैंने मुमानी से फुल्लो के बारे में पूछ ही लिया पता चला कि मुमानी की कोई रिश्ते की भांजी या भतीजी लगती है। और वह मुमानी के साथ ही रहती है। मैं घर

वापस आ चुका था। मेरे सभी कपड़ों पर जामुनों के नीले नीले निशानात पड़ चुके थे। नतीजे में मेरा थोड़ा सा बदन भी नीला किया गया था। जिसकी मुझे पूरी उम्मीद भी थी। लेकिन मैंने किसी बात की भी परवाह नहीं की। फुल्लो मेरे दिमाग़ पर छायी रही। और मैंने पूरा इरादा कर लिया कि मैं पढ़ने लिखने के बाद फुल्लो से ही शादी करूँगा। किसी तरह से दस ग्यारह महीने गुज़रे। गर्मियों की छुट्टियाँ आ गयीं। और मैंने फिर मामूँ के गाँव जाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की। ज़ाहिर है किसको ऐतराज़ होता मैंने अपना सामान वग़ैरह दुरुस्त किया। और मामूँ के यहाँ जा धमका। दोपहर को खाने के बाद मैं वहाँ लेटा सोच रहा था कि फुल्लो कहाँ है। नज़र नहीं आ रही है। फिर मैं उठकर घर के हर कमरे में झाँकता फिरा फुल्लो कहीं नज़र नहीं आयी। सोचा कहीं गयी होगी। आ जायेगी मेरे सब्र का पैमाना लबरेज़ हो चुका था। मुमानी फुल्लो कहाँ है। अरे तुम्हें नहीं मालूम उसकी तो अभी चार महीने पहले शादी हुई है। और तुम्हारी अम्मी ने उसकी शादी के लिये रुपये भी भेजे थे। और उस वक़्त मुझे एहसास हुआ कि ग़म क्या चीज़ होती है। मैं वहाँ से फ़ौरन हट गया ताकि मुमानी कुछ महसूस न कर पायें। और कमरे में आकर लेट गया। इस इत्तिला से मुझे ऐसा लगा कि जैसे पता नहीं क्या हो गया। कुछ अजीब सी कैफ़ियत सवार थी। जी चाहा कि अपना बैग वग़ैरह उठाऊँ और फौरन वहाँ से रवाना हो जाऊँ। तब मुझे याद आया कि मुमानी का एक ख़त घर पर आया तो था। जिसमें फ़रीदा की शादी की तारीख़ की इत्तिला थी बल्कि मैंने वह ख़त कई मरतबा पढ़ा भी था कि शायद इसमें कहीं फुल्लो का भी ज़िक्र हो। बल्कि अम्मी ने मुझसे ही फ़रीदा के लिये रुपया का मनीआर्डर करवाया था। तो इसके मानी फुल्लो का ही नाम फ़रीदा है। मुमानी फुल्लो तो इतनी छोटी थी। उसकी शादी कैसे हो गयी। मैंने मुमानी से पूछ लिया। मुमानी हँसने लगीं कहने लगीं गाँव में ऐसे ही

शादियाँ होती हैं।

बहरहाल मैं मामूँ के यहाँ तीन रोज़ से ज़्यादा नहीं रह सका था। और कई उल्टे-सीधे बहाने बनाकर वहाँ से आ गया। कॉलेज वगैरह खुल गये थे। मैंने ख़ुद को पढ़ाई में मसरूफ़ कर लिया। लेकिन फुल्लो का लालटेन में दमकता हुआ चेहरा अक्सर व बेशतर मेरी नज़रों के सामने आता रहा। पता नहीं फुल्लो ख़ूबसूरत थी कि नहीं, उसकी आँखें झील या उसके होंट याक़ूत थे या नहीं। लेकिन मुझे तो उसका लालटेन की रौशनी मे चमकता चेहरा ही बहुत अच्छा लगा था। उस वक़्त मैंने ज़रूरत नहीं महसूस की थी कि उसकी आँखे या होंट वगैरह के बारे में गौर करूँ। या इस बात का शऊर ही नहीं था।

वक़्त गुज़रता गया। मैं यूनिवर्सिटी पहुँच गया। धीरे-धीरे लालटेन की रौशनी में दमकता हुआ चेहरा मेरी नज़रों से ओझल होने लगा। लेकिन जब भी मुझे कहीं लालटेन नज़र आ जाती थी। मेरे दिल को एक टीस सी लगती थी। मुझे इस रहमकाना टीस पर हैरत भी होती थी। मैंने M.A कर लिया और फिर मुझे एक जगह नौकरी भी मिल गयी। और हर माँ की तरह मेरी अम्मी भी बड़े अरमानों से अपने लिये बहू ले आयीं। मेरी बीवी काफ़ी माक़ूल ख़ातून हैं। उनके साथ काफ़ी ख़ुशगवार ज़िन्दगी गुज़र रही है। बच्चे वगैरह भी यूनिवर्सिटी के तालिब इल्म हैं। अब मुझे फुल्लो का चेहरा बिल्कुल ही याद नहीं रहा। अलबत्ता लालटेन से ज़रूर एक उनसियत हो गयी है। और उसकी वजह एक एक बार बीवी बच्चों के सामने काफ़ी शरमिन्दा होना पड़ा था। हुआ यह कि बाजार से गुज़र रहा था एक दुकान पर लालटेन लटकी देखी। दिल नहीं माना ख़रीद ली। घर लालटेन लेकर पहुँचा। तो बीवी बच्चे सब लालटेन को हैरत से देख रहे थे। बच्चे यह सिर्फ़ लालटेन नहीं है कोई अजूबा है। यह क्यों उठा लाये मेरी बीवी ने दरयाफ़्त किया। अरे लाइट वगैरह चली जाती है तो घन्टा भर मोमबत्ती ढूँढी जाती है। अरे तो घर में दो लैम्प रखे

हैं वह बोली। बच्चे भी लालटेन को देखकर हँसे जा रहे थे। मुझ से कोई जवाब नहीं बन रहा था। अजब सा अपने को चूर-सा महसूस कर रहा था। बोला अरे बहुत सस्ती मिल रही थी। यूँ उठा लाया। फिर इससे पहले कि कुछ और सवाल जवाब होता मैं ने लालटेन उठाकर अलमारी में उन खूबसूरत लैम्पों के बीच में रख दिया। अरे यहाँ कहाँ रख दिया। कोठरी में डाल आती हूँ। मेरी बीवी बोली, लालटेन को देखकर ऐसा भड़क रही थी कि लालटेन की लौ क्या भड़कती होगी। मैंने कहा हाँ ताकि वहाँ ठोकर लगे और शीशा टूट जाये वह कुछ नहीं बोली बस लालटेन को घूरती हुई बावर्चीखाने की तरफ़ रवाना हो गयी।

आज बहुत दिनों बाद मामूँ का खत आया काफ़ी शिकवा शिकायत था कि शहर की मसरूफ़ ज़िन्दगी बहुत खुदग़र्ज़ होती है सब अपने आप में मस्त, तुम्हारी मुमानी इतनी बीमार पड़ी हैं कोई देखने नहीं आया वग़ैरह, वग़ैरह। खत पढ़ कर मैंने पहली फ़ुरसत में मामूँ के यहाँ जाने का प्रोग्राम बना लिया। बेगम साथ में थीं। मामूँ के घर पहुँचा। मुमानी बेचारी काफ़ी ज़ईफ़ हो गयी थीं। हम लोगों को उन्होंने गले लगाया फिर बरआमदे के दूसरे कोने में छलनी से दालें छानती हुई अधेड़ उम्र की औरत से कहा अरे देख तो कौन आया है। और ज़रा पहले इन लोगों के हाथ मुँह धोने के लिये पानी तो रख दो। वह औरत वहीं मुमानी के पास आकर खड़ी हो गयी। मैंने सोचा मुमानी को इससे ज़्यादा बदहैबत औरत ने असबात में सर हिला दिया जैसे मुझे पहचान गयी हो। यह फुल्लो है मुमानी मुझसे कह रही थीं और मैं बिल्कुल सन्नाटे में था। बचपन की उस फुल्लो और इस में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ था। मुझे यक़ीन ही नहीं आ रहा था। शाम के वक़्त वह भैंस का दूध दूह रही थी और मुझे अजीब किराहियत का एहसास हुआ। मग़रिब के वक़्त जब वह लालटेन जलाने लगी थी तो न चाहते हुये भी मेरी नज़र उसकी तरफ़ उठ गयी। अजीब डरावना चेहरा उसका लगा।

दूसरे रोज़ जब आम खाये जा रहे थे, तो फुल्लो ने दो तीन कच्चे आम भी लाकर रख दिये। यह कौन ले आया। इसे कौन खायेगा;

चह खायेंगे इन्हें खट्टे आम बहुत पसन्द हैं उसने मेरी तरफ देखकर कहा था। इन्हें खट्टे आम बहुत पसन्द हैं मेरी बीवी हैरत से मुझे देखने लगी। मुझे फुल्लो के बुढ़ापे का यह रोमांस पसन्द नहीं आया। मुमानी कहने लगीं अरे फुल्लो जा इन आमों की चटनी बनाले और वह कच्चे आम उठाकर चल दी। मैंने सोचा इस का नाम अब तक फुल्लो क्यों है। हम लोग मुमानी के यहाँ से वापस आ गये। एक रोज़ ऐसे ही मेरी नज़र अलमारी में रखी लालटेन पर उठ गयी। दो खूबसूरत लैम्पों के बीच में वह अजीब सी लग रही थी। मैंने उठकर लालटेन उठायी और उसको कोठरी में डाल आया। क्या ही अच्छा होता जो मैंने फुल्लो को देखा नहीं होता।

ooo